तंदुलवेयालियपइण्णयं (फोल्डर नं. ११४२)

मुख्य टाइटल
प्रकाशकीय
अर्थ –सहयोगी
विषयानुक्रम
भूमिका--१-३४
तंदुलवैचारिक-प्रकीर्णक--१
मंगलवाच्य – १ --३
द्वार – २-३ ---३
गर्भवास काल प्रमाण – ४-८ --३
गर्भधारण करने योग्य स्त्री योनी का स्वरूप – ९-१२ ---५
स्त्री योनि और पुरुष वीर्य की उत्पादक शक्ति समाप्त होने का काल – १३-१४------------------------------५
पितृ संख्या और उत्कृष्ट गर्भवास काल – १५---५
गर्भगत जीव की पुरुष स्त्री आदि परिज्ञा – १६ ---७
गर्भ उत्पत्ति और गर्भगत जीव का विकास क्रम – १७-१९---७
गर्भगत जीव का आहार परिणमन – २० --७
गर्भगत जीव की आहार विधि – २१-२२---९
गर्भ में स्थित जीव का आहार – २३-२४ ---११
गर्भस्थ जीव के माता-पिता के अंग निरूपण – २५--११
गर्भस्थ-जीव नरकों में उत्पत्ति – २६ ---११
गर्भस्थ जीव की देवलोकों में उत्पत्ति – २७ --१३
गर्भस्थ जीव का माता के समान स्वभाव - २८-३३--१३
पुरुष, स्त्री, नपुंसक आदि की उत्पत्ति – ३४-३६---१५
गर्भ का निर्गमन – ३७--१७
उत्कृष्ट गर्भवास काल – ३८ --१७
सौ वर्ष की आयु के मनुष्य की दस दशाएँ – ४५-५८ ---१७-२१
दस दशाओं में सुख-दुःख विवेक और धर्म साधना का उपदेश – ५९-६३------------------------------------२१
अन्तराय बहुल जीवन से पुण्यकृत करूण उपदेश – ६४ --२३
यौगलिक, अर्हत्, चक्रवर्ती आदि की देह ऋद्धि – ६५-६८ --२३-२९
सम्प्रतिकालीन मनुष्यों की देह, संहनन आदि की हानि और धर्मजन प्रशंसा – ६९-७५ -----------------२९
मनुष्य की सौ वर्ष आयु, सौ वर्ष विभाग और आहार परिमाण दि – ७६-८१ ------------------------३१-३५
समय आदि काल परिमाण का स्वरूप – ८२-८६ --३५
काल परिमाण निवेदक घटिका यन्त्र विधान विधि - ८७-९२ -------------------------------------३५-३७
वर्ष के मास, पक्ष और रात-दिन का परिमाण – ९३---३७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दिन, रात, मास, वर्ष और सौ वर्ष के उच्छ्वास परिमाण – ९४-९८ -- ३७-३९
आयु की अपेक्षा से अनित्य का प्ररूपण – ९९-१०७ -- ३९
शरीर स्वरूप – १०८-११३ -- ४१-४५
शरीर की असुन्दरता ११४-११६ -- ४५
शरीर आदि का अशुभत्व – ११७-११९ -- ४७
स्त्री शरीर विरक्ति उपदेश – १२०-१५३ -- ४७-५३
स्त्री शरीर-स्वभाव की उपेक्षा और वैराग्य का उपदेश – १५४-१६७ -- ५५-६१
उपदेश के अयोग्य मनुष्य – १६८ -- ६१
पिता पुत्र आदि की अशरणता – १६९-१७० -- ६१-६३
धर्म-प्रभाव – १७१-१७४ -- ६३
उपसंहार – १७५-१७७ -- ६३
परिशिष्ट-१
गाथानुक्रमणिका -- ६५-६८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org